बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

वर्ग : स्नातक तृतीय खण्ड								पृष्ठ : 01		दिनांक : 15.09.2020
प्रतिष्ठा	✓	अनुषंगिक	×	अनुपूरक	×	रा०भा० हिन्दी	×	अहिन्दी	×	हिन्दी	पत्र : VIII
व्याख्यान का विषय : रसनिष्पत्ति के सिद्धांतों की व्याख्या II										
प्राध्यापक : डॉ. उमेशकुमार.										

भट्ट लोल्लट के अनुसार संयोग का अर्थ है सम्बंध। यह सम्बंध तीन प्रकार का होता है। (i) उत्पाद्योत्पादक भाव (ii) गम्य-गमक भाव (iii) पोष्य-पोषक भाव. अर्थात विभाव, अनुभाव, संचारीभाव के संयोग (सम्बंध) से रस की ~~निष्~~ निष्पत्ति होती है तो है किन्तु ये तीनों तीन प्रकार के संयोग (सम्बंध) से रस उत्पन्न करते हैं। (i) विभाग के द्वारा रस उत्पन्न किया जाता है इसलिए विभाव (आलम्बन और उद्दीपन) उत्पादक हुए और रस उत्पाद्य। (ii) अनुभाव के द्वारा रस की अभिव्यक्ति या प्रतीति होती है इसलिए अनुभाव हुआ गमक (प्रतीति करानेवाला) और रस हुआ गम्य (प्रतीत होनेवाला), (iii) संचारीभाव से रस की पुष्टि होती है इसलिए वे सब रस के पोषक हैं और रस पोष्य है। ~~इनके अनु~~

इनके अनुसार निष्पत्ति के तीन अर्थ हुए - (i) उत्पत्ति (ii) अभिव्यक्ति अथवा प्रतीति (iii) पुष्टि। इसलिए भरत ने जो संयोग कहा है वह संयोग एक प्रकार का न होकर उपर्युक्त तीन प्रकार का होता है। इसी संयोग से भरत ने रस की निष्पत्ति बताई है जिसका तात्पर्य है रस की उत्पत्ति। इस मत की जमकर आलोचना भी हुई है।

<u>शंकुक का अनुमितिवाद या अनुमानवाद</u> :- शंकुक का मत है कि रस केवल अनुमान का विषय है, वास्तविक नहीं। जब रंग मंच पर कोई अत्यंत अभिनय-कुशल तथा काव्य-नाटक में रूचि रखने वाला अभिनेता नाटक के नायकों तथा पात्रों का अभिनय अत्यंत स्वाभाविकता, प्रभावशीलता तथा रोचकता से करता है तब उसे देखकर दर्शक आनन्दमग्न हो जाते हैं और वे उस नट को ही वास्तविक नायक (राम या सीता) समझने लगते हैं। जैसे किसी चित्र में बने हुए घोड़े को देखकर ~~उसे~~ लोग घोड़ा ही मान लेते हैं वैसे ही राम की भूमिका ग्रहण करनेवाले नट को भी लोग 'इस चित्र-तुरंग-न्याय' से राम ही मान लेते हैं। इसलिए जो रस वस्तुतः राम में उत्पन्न होता है उसी का अनुमान अभिनयकुशल नट में भी कर लिया जाता है और दर्शकमंडली भी इसी अनुमान के बल पर रस ग्रहण करती तथा आनन्दित होती है। अतः भरत के सूत्र में 'संयोगात्' शब्द का अर्थ हुआ अनुमान से और निष्पत्ति का अर्थ हुआ अनुमिति (किसी कारण के आधार पर उत्पन्न हुआ ज्ञान), अर्थात विभाव, अनुभाव और संचारी के

अनुमान से रस की अनुमिति होती है।

भट्ट तौत : अभिनवगुप्त के गुरु भट्ट तौत ने शंकुक के अनुमानवाद का बड़ा खण्डन किया और कहा कि "अनुमान के आधार पर रस निष्पत्ति का कभी विचार ही नहीं किया जा सकता है क्योंकि अनुमान तो हेतु की विशुद्धि पर आश्रित होता है अर्थात् अनुमान के लिए हमें कोई कारण चाहिए किन्तु रस की उत्पत्ति के लिए कारण होते हुए भी शास्त्रीय दृष्टि से अनुमान का कोई अस्तित्व नहीं होता। इस मत की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि अनुमान कभी आनन्ददायक नहीं हो सकता क्योंकि "मन मोदक नहीं भूख बुझानी"। चित्र में घोड़ा देखकर और उसे घोड़ा मानकर भी उस पर चढ़ कर नहीं जाया जा सकता है।

शंकुक के अनुमानवाद में यह स्पष्ट किया गया कि दर्शक के हृदय में अनुमान के बल पर आनन्द प्राप्त होता है। किन्तु यह सिद्धांत पूर्णतः निराधार है। स्वादिष्ट भोजन को दूर से देखकर मुँह में पानी तो आ सकता है किन्तु वह इसी बात का व्यंजक है कि उसके आस्वादन के लिये अत्यंत तीव्र उत्कंठा है, वह आस्वादन का आनंद नहीं है। भट्ट तौत के रस खण्डन के अतिरिक्त भी यह स्पष्ट है कि आनन्द कभी अनुमान में नहीं होता, वह तो प्रत्यक्ष अनुभूति में ही होता है और उसी समय होता है जब कि हमारी इन्द्रियाँ मन के संयोग से उस आनन्द में भागी बनें।

क्रमशः —